फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 274 1/- अपैल 2011

एटम बमों से अधिक खतरनाक हैं परमाणु बिजलीघर

✶बिजली का उत्पादन कैसे होता है ? बिजली का उपभोग कैसे होता है ? बिजली का बढता उत्पादन और उपभोग क्या अच्छी बात है ? अधिकाधिक ऊर्जा की आवश्यकता क्यों है ? क्या बिजली चाहिये ? कितनी बिजली चाहिये ? कैसी बिजली चाहिये ? कितना-कुछ बिजली के लिये दाँव पर लगायेंगे ? बिजली रूप में ऊर्जा क्यों चाहिये ? ✶गति का उत्पादन कैसे होता है ? रफ्तार का उपभोग कैसे होता है ? बढती स्पीड का उत्पादन और उपभोग क्या अच्छी बात है ? अधिकाधिक गति की आवश्यकता क्यों है ? क्या तेज गति चाहिये ? कितनी तेज रफ्तार चाहिये ? कैसी स्पीड चाहिये ? कितना-कुछ तीव्र गति के लिये दाँव पर लगायेंगे ? गति क्यों चाहिये ? ✶चमक-दमक का उत्पादन कैसे होता है ? चमक-दमक का उपभोग कैसे होता है ? बढती चमक-दमक का उत्पादन और उपभोग क्या अच्छी बात है ? अधिकाधिक चमक-दमक की आवश्यकता क्यों है? क्या चमक-दमक चाहिये ? कितना-कुछ चमक-दमक के लिये दाँव पर लगायेंगे ? चमक-दमक क्यों चाहिये ?

प्रश्न तकनीकी कम और सामाजिक ज्यादा हैं। इन दो सौ वर्षों पर केन्द्रित रहेंगे।

●हॉर्स पावर। पाँच-दस-बीस हॉर्स पावर की मोटर...... भारतीय उपमहाद्वीप से आरम्भ होती तो घोड़े की बजाय बैल के आधार पर चार-आठ-सोलह "बैल ऊर्जा" होती। मानव तथा पशु माँसपेशियों के अतिरिक्त भाप-कोयला, पैट्रोल, बिजली ऊर्जा के स्वरूप। इन दो सौ वर्ष में समस्याओं के तकनीकी समाधानों की भरमार रही है।

●छुट-पुट समस्याओं, क्षेत्र-विशेष की समस्याओं को तकनीकी समाधानों ने इन दो सौ वर्षों में विकराल बना दिया है, विश्व-व्यापी बना दिया है। पृथ्वी पर जीवन विनाश के कगार पर पहुँच गया है।

इसलिये "क्या बिजली चाहिये ?" का प्रश्न आज पागलपन के तौर पर नकारा नहीं जा सकता।

–प्रकृति के दोहन और मनुष्यों के शोषण से सभ्यता आरम्भ हुई। आज हम सभ्यता के प्रगति और विकास के दौर में हैं।

–पक्के मकान, सड़कें, बिजली, रोटी, मनोरंजन, सुरक्षा प्रगति और विकास के झुनझुने हैं।

–निवास को सीमेन्ट-स्टील-पेन्ट ने बीमारियों का घर बना दिया है। सड़कें कत्लेआम के अखाड़े बनी हैं। भोजन का उत्पादन जहर का उत्पादन बन गया है। मनोरंजन औजार है थके-हारे-टूटे तन और मन को बहलाने-बहकाने का। सुरक्षा के उपाय इतने कारगर हो गये हैं कि इनका प्रयोग पृथ्वी पर कई बार जीवन को नष्ट कर सकता है। दवा स्वयं ही बीमारी है। बिजली......

बिजली सुविधा है अथवा आफत? बिजली आदर्श है अथवा मजबूरी? विचार करना बनता है।

✶सूर्योदय से सूर्यास्त...... दास-भूदास रात को सोते थे। सौ-सवा सौ वर्ष पहले बिजली का उत्पादन इतना कम था कि फैक्ट्रियों में सूर्यास्त के बाद काम नहीं हो सकता था। आज से सौ-सवा सौ वर्ष पहले कारखानों में काम करने वाले मजदूर रात को आराम करते थे। बिजली के उत्पादन में वृद्धि ने रात को रात नहीं रहने दिया। आज वाहन उद्योग में हों चाहे वस्त्र उद्योग में, या फिर कॉल सेन्टर में..... कारखानों-कार्यालयों-यातायात आदि-आदि में दुनिया-भर में करोड़ों लोग रात को भी काम में जुतते हैं। रात को जागना तन और मन को अतिरिक्त पीड़ा पहुँचाने के संग-संग नई बीमारियाँ भी लिये है......

✶कोयला से बिजली का उत्पादन..... बहुत प्रदूषण जो कि दिखता भी है। डीजल से बिजली उत्पादन..... महँगा भी और बहुत प्रदूषण जो कि दिखता भी है। गैस से बिजली.... बहुत प्रदूषण। कोयला-डीजल-गैस के भण्डार समाप्ति की तरफ हैं। बाँध बना कर जल से बिजली उत्पादन. .... विस्थापन के लफड़े, रखरखाव के खर्चे, सीमित क्षमता, भूकम्प की सम्भावना बढाना। ऐसे में "साफ-सुरक्षित-अनन्त काल" वाली परमाणु बिजली तारणहार..... जापान में परमाणु बिजलीघरों द्वारा मचाई जा रही तबाही इस नौका को भी कागजी दिखा रही है। सब सरकारें परमाणु बिजलीघरों में लगातार होते हादसों को छिपाती रही हैं पर चेर्नोबिल का बड़ा हादसा छिपाया नहीं जा सका था और उसने परमाणु बिजलीघरों की बीस वर्ष तक नकेल कस दी थी। इधर परमाणु बिजलीघरों ने फिर से नाचना आरम्भ ही किया था कि जापान में परमाणु बिजलीघर कहर ढाने लगे.... परमाणु बिजलीघरों का कचरा तक बहुत खतरनाक है, हजारों वर्ष तक हानिकारक रहता है। परमाणु बिजलीघरों से खतरे किसी सीमा में नहीं बँधे हैं, इनकी कोई समयसीमा-सी भी नहीं है। यह सम्पूर्ण पृथ्वी को अपनी चपेट में लिये हैं, कई-कई पीढियों तक मार करते हैं......

विकल्पों की, वैकल्पिक ऊर्जा की छटपटाहटें समस्या के तकनीकी समाधान की नई कोशिशें मात्र लगती हैं।

अनजाने में गलत हो जाना एक सामान्य बात है। लेकिन सभ्यता-प्रगति-विकास में जानते हुये गलत करने की परम्परा है। आज यह चन्द लोगों तक सीमित नहीं है। आज जानते हुये गलत करना ने एक महामारी का रूप ले लिया है। इस-उस व्यक्ति-विशेष, संस्था-विशेष को दोष देना नादानी है अथवा अति काँइयापन है। मामला सामाजिक लगता है, सामाजिक मजबूरी का लगता है।

ऐसे में, बिजली की ही बात करें तो, यह हमारी मजबूरी है। आज बिजली, बड़ी मात्रा में बिजली की आवश्यकता हमारी मजबूरी है, विनाशकारी मजबूरी है। ऐसी मजबूरियों से पार कैसे पायें ?

इस सन्दर्भ में हमारे विचार से, दुनिया के पाँच-छह अरब लोगों के बीच आदान-प्रदान बढाना प्राथमिक आवश्यकता है। विश्व में आज हर किसी का तन-मन-मस्तिष्क हलचल में है। कोई भी ऐसी प्रस्थापना नहीं है जिस पर प्रश्न नहीं उठ रहे हों। सभ्यता-प्रगति-विकास नये-पुराने "पवित्रों" को ढाल-तलवार बना रहा है सवालों के खिलाफ। जो रहा है और जो है के परिणाम बहुत दुखदायी हैं इसलिये देश-सेना-जनतन्त्र-धर्म-प्रगति-विकास वाले "पवित्रों" के हर पहलू पर प्रश्न-दर-प्रश्न उठाने अति आवश्यक लगते हैं। जारी सामाजिक मन्थन को इससे गति मिलेगी। मजबूरियों और जानते हुये गलत करने के पार जाने की राहें सामाजिक उथल-पुथल खोल रही हैं। नये समुदायों वाली नई समाज रचना में मजबूरियों और जानते हुये गलत करने से मुक्ति नजर आती है।■

फरीदाबाद में मजदूर

फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स मजदूर : "प्लॉट 3 तथा 8 व 9 सैक्टर-27 बी स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 12½ घण्टे की जनरल शिफ्ट के संग 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। सुबह 8 बजे काम आरम्भ करने वालों को रात 8 बजे बाद रात 1 बजे तक, अगली सुबह 5 तक रोक लेते हैं। हर रविवार को भी दिन में 8-10 घण्टे काम अनिवार्य। उत्पादन के लिये बहुत ज्यादा दबाव – फोरमैन, सुपरवाइजर, मैनेजर कैजुअल वरकरों में हैल्परों को बहुत गाली देते हैं और जनरल मैनेजर थप्पड़ भी मार देता है, उत्पादन के लिये जनरल मैनेजर ने एक स्थाई मजदूर को भी थप्पड़ मारे..... 20 टन से 1000 टन की 60-70 पावर प्रेस हैं। अधिकतर प्रेसें पुरानी हैं और सुरक्षा उपकरण किसी में नहीं हैं। ज्यादातर पावर प्रेसों को हैल्परों से चलवाते हैं। प्रेसों पर भी 12 घण्टे बाद 17 घण्टे, 21 घण्टे तक रोक लेते हैं। दिन में दबाव के कारण अधिक एक्सीडेन्ट होते हैं। व्हील टूटने, माल निकालने की तेजी में पैडल दबना, सुपरवाइजर की डाँट.. ... एक-दो-तीन उँगली, अँगूठा, दोनों हाथ की उँगली कट जाती हैं। हर महीने 2-4 मजदूरों के हाथ कट जाते हैं। हाथ कटने पर कम्पनी ई.एस.आई. नहीं ले जाती, एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती, सैक्टर-16 में प्रायवेट अस्पताल में ले जाती है। पावर प्रेसों की डाई 50-80 किलो की हैं और इन्हें हाथों से उठाना पड़ता है। हाथ दब जाते हैं, पैर कुचल जाते हैं। सुपरवाइजर उल्टे मजदूर को कहते हैं कि तुम्हारी लापरवाही के कारण चोट लगी। उपचार के दौरान जो दिहाड़ी छूटती हैं उनके पैसे कम्पनी नहीं देती। उँगली-अँगूठे कटने का मुआवजा भी कम्पनी नहीं देती। प्रारम्भिक उपचार के बाद कोई मजदूर ई.एस. आई. जाता है तो वहाँ रिपोर्ट माँगते हैं जिसे प्रायवेट वाले डॉक्टर देते नहीं और फैक्ट्री जाने पर ई.एस.आई. कार्ड ले कर कहते हैं कि जाओ अब ई.एस.आई. में इलाज करवाओ..... महीने में ओवर टाइम के 100 से 225 घण्टे, भुगतान सिंगल रेट से और गडबड़ कर हर महीने कुछ कैजुअलों के 400-500 रुपये खा जाते हैं। हाजिरी में भी गड़बड़ी करते हैं। जुलाई से देय डी.ए. अक्टूबर से देना शुरू किया और इधर जनवरी से देय महँगाई भत्ता फरवरी की तनखा में भी नहीं दिया है – कैजुअलों को एरियर देते ही नहीं। दिसम्बर 10 और जनवरी 11 में कैजुअलों को पे-स्लिप दी पर उन में ओवर टाइम का जिक्र नहीं, ई.एस.आई. सँख्या नहीं, पी.एफ. नम्बर नहीं..... इधर फरवरी में पे-स्लिप नहीं दी। सात महीने पर कैजुअल वरकर का ब्रेक कर देते हैं और दो महीने बाद फिर भर्ती कर लेते हैं – कई मजदूर फैक्ट्री में काम करते रहते हैं पर दो महीने उनकी तनखा से ई. एस.आई. व पी.एफ. की राशि नहीं काटते। यहाँ 100 स्थाई मजदूर और 1000-1200 कैजुअल वरकर दुपहिया तथा तिपहिया वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। कैजुअलों में 300-350 ऑपरेटर और 700-800 हैल्पर हैं। कैजुअलों में ऑपरेटरों को 12 घण्टे में चाय के लिये 15 रुपये, 17 घण्टे पर 30 रुपये और 21 घण्टे पर 50 रुपये रोटी के लिये कम्पनी देती है। कैजुअलों में हैल्परों को 12 घण्टे, 17 घण्टे, 21 घण्टे लगातार काम के दौरान एक कप चाय भी कम्पनी नहीं देती, रोटी के लिये एक पैसा भी नहीं देती। बदरपुर में फ्लैश इलेक्ट्रोनिक्स की ऑटो मीटर बनाने वाली फैक्ट्री है और फरीदाबाद में डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट में चौथी फैक्ट्री बन गई है।"

साधु ओवरसीज श्रमिक : "प्लॉट 127 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3800 रुपये और इन 3800 में से ही ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं। ऑपरेटरों की तनखा 4800 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, रविवार को दिन में 8 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। निर्यात के लिये गियर तथा गियर कवर बनते हैं – 30 से 150 किलो वजन को हाथों से उठवा कर मशीनों पर लोड करवाते हैं और चोट लगने पर मजदूर से 'मेरी गलती से चोट लगी' लिखवाते हैं। पीने का पानी अभी भी साफ नहीं..... पिछले वर्ष अक्टूबर में एक पुराने मजदूर ने हिसाब माँगा और वाउचर पर बिना देखे हस्ताक्षर कर दिये। वाउचर पर मात्र 1700 रुपये लिखा था – मजदूर एकत्र हुये और स्टाफ के साथ मारपीट हुई। साफ पानी, जूते-वर्दी, 20 दिन पर एक सवेतन छुट्टी, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन, पे-स्लिप कम्पनी से माँगे तो साहब बोले दे देंगे, धीरे-धीरे दे देंगे। तब मैनेजमेन्ट ने 22-24 मजदूर निकाल दिये थे जिन में 4-5 हिसाब ले गये, 12-14 को कम्पनी ने वापस ले लिया और 7-8 का मामला श्रम विभाग में चल रहा है।"

शाही एक्सपोर्ट कामगार : "15/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में मुख्य समस्या उत्पादन-उत्पादन-उत्पादन है। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा है। फीडर हर घण्टे हर वरकर का उत्पादन लिख कर सुपरवाइजरों को देते हैं। प्रतिघण्टा टारगेट पूरा नहीं किया तो सुपरवाइजर चिल्लाते हैं, नौकरी से निकालने की धमकी देते हैं। सिलाई में, फिनिशिंग में, सब जगह टारगेट निर्धारित हैं। उत्पादन पूरा करने का तनाव...... गलती भी नहीं चाहिये – हर वरकर का हर पीस में कोड जिससे पकड़ सकें – इसका तनाव...... 16-17 मार्च को धागे काटने वालों से भोजन अवकाश से पहले का निर्धारित उत्पादन पूरा नहीं हुआ तो उन्हें भोजन करने का समय नहीं दिया, काम में लगाये रखा। सैकेण्ड फिनिशिंग में दूसरी मंजिल पर चद्दरों की छत के तले बहुत ज्यादा काम के दबाव तथा गर्मी के कारण 18 मार्च को धागे काटने वाली एक महिला मजदूर 2-2½ बजे बेहोश हो गई..... मई-जून में क्या होगा? पिछले वर्ष एक रोज यहाँ 50 मजदूर बेहोश हुये थे। उत्पादन के फेर में 5 मार्च को एक सुपरवाइजर ने प्रेसमैन को गाली दी तो प्रेसमैनों ने घेर कर सुपरवाइजर को गिरा दिया। प्रोडक्शन मैनेजर ने निर्धारित उत्पादन नहीं करवा पाने पर 12 मार्च को फिर एक सुपरवाइजर को थप्पड़ मारा। आजकल सिलाई में ओवर टाइम कम लगता है जबकि फिनिशिंग में महिला मजदूरों का रोज 2 घण्टे और पुरुष मजदूरों की 3 मार्च से 18 मार्च के दौरान प्रतिदिन सुबह 9 से रात 1 बजे तक ड्युटी। फरवरी में कम्पनी ने 3 रविवार को ओवर टाइम करवाया। भुगतान दुगुनी दर से करते हैं पर ओवर टाइम को पे-स्लिप में दिखाते नहीं। साढे दस घण्टे तक काम में चाय के लिये कोई समय नहीं देते। रात 1 बजे तक रोकते हैं तब 25 रुपये रोटी के लिये देते हैं और 7½ से 8½ का समय बाहर रेहड़ी पर खाने के लिये देते हैं। फैक्ट्री में कैन्टीन है पर भोजन नहीं बनता, चाय भी नहीं बनती। यहाँ काम करते दो हजार मजदूरों में ज्यादा सँख्या महिला मजदूरों की है। कम्पनी एक-एक मिनट का हिसाब रखती है, एक मिनट देरी से पहुँचने, छूटते समय एक मिनट पहले कार्ड पंच करने पर महीने में 50-80 रुपये काट लेते हैं।"

प्रणव विकास वरकर : "45-46 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में मुख्य समस्या तनखा कम होना है। सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन ही देते हैं। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। घण्टों में गड़बड़, दिहाड़ी कटने की समस्या को कम्पनी अधिकारी सुनते ही नहीं। कैन्टीन में भोजन बहुत खराब और पेट भी नहीं भरता। रात के समय लाइन लीडर बदतमीजी करते हैं।"

ओमेगा ऑटो मजदूर : "गली नं. 2, कृष्णा कॉलोनी, सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों की तनखा 3500 और पुरुष मजदूरों की 3800 रुपये। ड्रिल, वैल्डिंग, लेथ, मिलिंग, पावर प्रेस..... और तीन सी एन सी मशीनें हैं जिन पर महिला मजदूरों को भी लगा देते हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सुबह 8½ से रात 8 बजे तक काम, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रविवार को 8 घण्टे ओवर टाइम। वाहनों के इंजनों की तेल व हवा की लोहे की पाइप यहाँ बन कर **इम्पीरियल ऑटो** जाती हैं और वहाँ से **होण्डा, हीरो होण्डा, मारुति सुजुकी** को।"

इण्डो ऑटो टेक श्रमिक : "प्लॉट 261 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में लोहे की पतली व मोटी शीट काटने तथा मोड़ने वाली कम्प्युटर संचालित मशीनों पर ऑपरेटरों की 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट और हैल्परों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हाइड्रोलिक, पावर प्रेस, वैल्डिंग मशीनों पर कार्य करते ऑपरेटरों व हैल्परों, दोनों की ही 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 17-20 रुपये प्रतिघण्टा। **जे सी बी** की लोडर आर्म बनती है ......"■

महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

गुड़गाँव में मजदूर

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : "उद्योग विहार स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को हर महीने तनखा देरी से देते हैं। फरवरी की तनखा 16 मार्च तक नहीं दी थी..... प्लॉट 205 फेज-1 वाली ईस्टर्न मेडिकिट फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों ने 17 मार्च को सुबह काम आरम्भ ही नहीं किया। काम बन्द किये दो घण्टे हो गये तब मैनेजमेन्ट ने कहा कि 18 मार्च को तनखा दे देंगे। कम्पनी की योजना होली से पहले 500-1000 रुपये 'एडवान्स' देने और फरवरी की तनखा होली के बाद देने की थी पर 18 मार्च को देनी पड़ी।"

सरगम श्रमिक : " उद्योग विहार में प्लॉट 153 तथा 210 फेज-1, प्लॉट 224 फेज-4, प्लाट 540 फेज-5 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों से दिवाली के एक महीने पहले नब्बे प्रतिशत मजदूरों को निकाल देते हैं। इस प्रकार 2008 से 90% मजदूरों को बोनस नहीं दिया है। ऐसे में 14, 15 और 16 मार्च को कम्पनी की फैक्ट्रियों में मजदूरों ने काम बन्द कर बोनस माँगा। प्लॉट 210 में 16 मार्च को 1½-2½ बजे के दौरान काम बन्द रहा तब कम्पनी ने बोनस के लिये आवेदन लिख कर देने को कहा। अब इधर 24 मार्च को साहब बोले हैं कि 25 मार्च को सब मजदूरों को निकालेंगे....."

गौरव इन्टरनेशनल कामगार : "236 उद्योग विहार स्थित फैक्ट्री में हर महीने गड़बड़ कर 400-500 रुपये खा जाते हैं। आठ-दस मजदूर परसनल विभाग में जाते हैं तो कहते हैं कि इक्ट्ठे क्यों आते हो, एक-एक कर आओ। एक-एक कर जाते हैं तो गाली देते हैं, कहते हैं कि 100-200 के लिये क्यों आते हो। दो-चार पुरानों को काटे पैसे दे देते हैं पर बाकी के नहीं देते। सुबह 9 से रात 10½ तक हर रोज काम – जबरन रोकते हैं। दो घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी समय का सिंगल रेट से। यहाँ **गैप, असमारा, डीलर्स** का माल बनता है। साहब कहते हैं कि बायर प्रतिनिधि पूछें तो कहना कि ओवर टाइम नहीं होता, कभी-कभी दो घण्टे होता है, रात का भोजन कमरे पर जा कर करते हैं। यहाँ कम्पनी द्वारा रखे दो-तीन हजार मजदूरों के अलावा फिनिशिंग विभाग में ठेकेदार के जरिये 400-500 वरकर रखे हैं और उन मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

कलमकारी वरकर : "280 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 400 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 1600 मजदूर काम करते हैं। पे-स्लिप नहीं देते। महीने में 125 घण्टे ओवर टाइम – स्थाई मजदूरों को डेढ की दर से और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को सिंगल रेट से भुगतान। मजदूर वही रहते हैं पर 6 महीने बाद नये सिरे से रखते हैं, कार्ड बदल देते हैं। शौचालय गन्दे।"

मोडलामा मजदूर : "417 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 10½ की ड्युटी रोज है और महीने में कम से कम 12 बार रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। टेलर व चैकर को ओवर टाइम के दो घण्टे का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी समय का सिंगल रेट से। अन्य सब मजदूरों को पूरे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। अगर साँय 6 बजे छुट्टी कर ली तो अगले दिन गाली देते हैं। काम करते 3 महीने हो जाते हैं तब ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू करते हैं। नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म भरवाने के लिये बहुत दौड़ाते हैं। हैल्परों को फरवरी की तनखा भी 4350 रुपये ही दी, जनवरी से देय डी.ए. के 155 रुपये नहीं दिये, एरियर खा जाते हैं। शौचालय गन्दे।"

स्टिकपेन श्रमिक : "318 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में लिखने के पेन बनाते हैं। रविवार को दिन में 9 घण्टे और रात को 12 घण्टे काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3200 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 2-4 मजदूरों की और यही स्थाई हैं, बाकी सब कैजुअल वरकर हैं। पीने का पानी साफ नहीं। शौचालय गन्दे।"

सान इन्टरनेशनल कामगार : "203 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 10½ तक रोज काम। फिर आधा घण्टा-एक घण्टा होते-होते रात के 1½ बज जाते हैं और कभी-कभी काम के चक्कर में रात को खाने का समय भी नहीं देते। अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को साँय 5 बजे छोड़ देते हैं। सिलाई कारीगरों के महीने में 100-125 घण्टे और फिनिशिंग विभाग वरकरों के 200 घण्टे ओवर टाइम के, भुगतान सिंगल रेट से। रात 1½ तक रोकते हैं तब रोटी के लिये 25 रुपये और अगली सुबह 6 बजे तक रोकते हैं तब 50 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में करीब 700 मजदूर हैं पर कैन्टीन नहीं है। सिलाई कारीगरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। पीने के पानी में बहुत मिट्टी रहती है। शौचालयों के दरवाजे टूटे हैं। ठेकेदार है पर पता नहीं चल पाता – सम्भवतः जनरल मैनेजर ही ठेकेदार है।"

शेरी क्लोथिंग वरकर : "400 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में एक दिन छुट्टी करने पर दो दिन के पैसे काट लेते हैं। मैनेजर गाली देता है। हैल्परों की तनखा 4200 रुपये और सिलाई कारीगर पीस रेट पर। शौचालय गन्दे।"

एना फैशन मजदूर : "893 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 रुपये और सिलाई कारीगर पीस रेट पर। दो सौ में 4 मजदूर ही स्थाई, बाकी सब कैजुअल वरकर। साहब बोले कि बन्द कर रहे हैं, 31 मार्च को ताला लगायेंगे, काम ढूँढ लो, पहले ही चले जाओ, 7 अप्रैल को हिसाब ले जाना...... एक मजदूर द्वारा यह कहने पर कि क्यों चक्कर लगवाते हो, नौकरी छोड़ने के संग हिसाब दे दो, अकाउन्टेन्ट ने गुस्सा हो कर उसे धक्का दिया। इस पर वह वरकर मैनेजर से मिला, डायरेक्टर से मिला तो साहबों ने उस मजदूर को गेट बाहर करवा दिया।"

वोडाफोन श्रमिक : "102 उद्योग विहार फेज-1 स्थित कार्यालय अपने प्रयोग के लिये गाड़ियाँ ठेके पर रखता है। इन वाहनों के ड्राइवरों को गर्मी-सर्दी-बरसात और दिन-रात गेट बाहर इन्तजार करते रहना पड़ता है। वोडाफोन कम्पनी ने ड्राइवरों के लिये रैस्ट रूम नहीं बनाया है।"

आई एम टी मानेसर

एडिगियर इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 150 सैक्टर-4 आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ काम आरम्भ होता है और साँय 6 बजे कार्ड पंच कर छुट्टी करना दिखाते हैं जबकि कार्य चलता रहता है। रात पौने आठ से 9 तक भोजन अवकाश के बाद रात 1 बजे तक काम, अगली सुबह 5 बजे तक काम। जनवरी, फरवरी, 18 मार्च तक 650 सिलाई कारीगर, 100 कटिंग वाले तथा 350 फिनिशिंग विभाग वरकर दिन-रात एक किये थे। सिलाई कारीगरों ने एक दिन रात 8 तक तो दूसरे दिन रात 1 बजे तक काम किया और हर रविवार को सुबह 9½ से साँय 5 तक। फिनिशिंग में 80 महिला मजदूरों ने रोज सुबह 9½ से रात 8 तक और प्रत्येक रविवार को सुबह 8 से साँय 6 तक काम किया। फिनिशिंग में पुरुष मजदूरों ने जनवरी में रोज रात एक बजे तक, 14 बार अगली सुबह 5 बजे तक और हर रविवार को सुबह 9½ से रात 8 बजे तक काम किया। प्रेसमैनों ने तो जनवरी में 26 बार सुबह 9½ से अगली सुबह 5 बजे तक काम किया। सुबह 5 बजे छूट कर 4½ घण्टे बाद 9½ से फिर काम में लगना। यही सब फरवरी में। अत्याधिक काम से 19 में से 3 प्रेसमैन बीमार पड़ गये और होली के बाद 11 ही काम पर लौटे हैं। होली के बाद 300 सिलाई कारीगर, 100 फिनिशिंग विभाग वरकर और 40 कटिंग वाले भी नहीं लौटे हैं। **एडिडास, रीबोक, पूमा, बेनाटॉन, जमूरी** आदि द्वारा माल की भारी माँग है और इधर मजदूरों की बहुत कमी है। कम्पनी ओवर टाइम दिखाती ही नहीं और भुगतान सिंगल रेट से करती है। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। रात 1 बजे तक पर रोटी के लिये मात्र 25 रुपये और अगली सुबह 5 बजे तक पर सिर्फ 40 रुपये देते हैं.... नाइट लगवाते हैं तब रोटी के लिये कम से कम 50 रुपये और फुल नाइट लगवाते हैं तब 100 रुपये तो होने ही चाहियें। मजदूर अब ओवर टाइम के लिये मना कर रहे हैं और तनखा बढाने की कह रहे हैं ताकि नये मजदूर काम करने आयें। काम का इतना ज्यादा दबाव और तनखा देरी से, जनवरी की 18 फरवरी को दी। फरवरी माह की तनखा 13 मार्च तक नहीं दी थी....... 14 मार्च को फैक्ट्री के अन्दर अपनी-अपनी जगह मजदूर गये और किसी भी विभाग में काम शुरू नहीं किया। आपस में बातें कर ली थी। अगले रोज, 15 मार्च को भी सब मजदूर अन्दर गये और बैठे – कोई हल्ला नहीं किया। जनरल मैनेजर और मैनेजिग डायरेक्टर ने 18 मार्च को तनखा देने का आश्वासन दिया तब 16 मार्च को कार्य आरम्भ किया। साहबों को बता दिया कि ऐसे ही तनखा में देरी रही तो कहीं और काम देखेंगे। इधर मार्च की तनखा 7 अप्रैल को देने की तैयारी है......"

(बाकी पेज चार पर)

दिल्ली में मजदूर

ओम ज्योति एपरेल्स मजदूर : "बी-241 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 4 मार्च को कम्पनी द्वारा दी पर्चियों पर हम ने हाजिरी तथा ओवर टाइम के घण्टे भर कर दिये तब हमें पता चला कि फरवरी की तनखा पुराने ग्रेड, 5278-6448 रुपये अनुसार दी जायेगी। हम ने नये ग्रेड, 6084-7410 के हिसाब से पैसे माँगे। मैनेजमेन्ट ने 4 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया। मन खराब..... 5 मार्च को एक बजे के भोजन अवकाश के बाद फैक्ट्री में काम बन्द। फिनिशिंग विभाग इनचार्ज ने तीन-पाँच की, मजदूरों ने उसे घेर लिया, हमारे गुस्से से बचने के लिये फिनिशिंग इनचार्ज जनरल मैनेजर के दफ्तर में भागा। चेयरमैन के बेटे डायरेक्टर ने तब कहा कि सरकार से कागज नहीं आया है, मार्च की तनखा नये ग्रेड अनुसार देंगे और साथ में फरवरी माह का एरियर भी। कम्पनी ने काम नोएडा भेजना शुरू कर दिया। काम नहीं है कह कर 15 मार्च को 35 सिलाई कारीगर और 23 मार्च को 8 कटिंग के तथा 8 फिनिशिंग के मजदूर नौकरी से निकाले. .... ओम ज्योति एपरेल्स में अब 250 मजदूर हैं जिनमें 50 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। ड्युटी सुबह 9 से साँय 5½ की है और आधा घण्टे के ब्रेक के बाद, 6 से रात 10 तक, रात 1 बजे तक काम करवाते हैं। रात 10 बजे तक रोकते हैं तब ओवर टाइम के पैसे डेढ की दर से देते हैं। रात 1 बजे तक रोकते हैं तब रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं और.... और पूरे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से कर देते हैं। फैक्ट्री में जगह-जगह कैमरे लगा रखे हैं। काम के लिये बहुत ज्यादा दबाव बना कर रखते हैं। शौचालय बहुत-ही ज्यादा गन्दे रहते हैं।"

इनो सम्राट श्रमिक : "बी-125 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूरों में 100 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों में धागे काटने की तनखा 3200-3600, मोती-सितारे लगाने की 4500 तथा प्रेसमैनों की 5000 रुपये। ड्युटी सुबह 9 से रात 8½ की, रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

एन्जल प्रिन्टिंग प्रेस कामगार : "बी-14/7 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर, फीडरमैन, लैमिनेशन ऑपरेटर की तनखा 3800-4200 रुपये। ड्युटी सुबह 9 से रात 9 की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

सुरक्षा कर्मी : "कारपोरेट ऑफिस नेब सराय में और एबी-14 बी सफदरजंग एन्कलेव में भर्ती कार्यालय वाली **एस डी एस सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में महीने की तीसों दिन ड्युटी करवाती है और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। लेकिन कागजों में ओवर टाइम प्रतिदिन 2 घण्टे तथा भुगतान दुगुनी दर से और महीने में चार साप्ताहिक अवकाश दिखाते हैं। ई.एस.आई. कार्ड मिलता है और नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे मिल जाते हैं। भर्ती के लिये 1500+500+500, कुल 2500 रुपये वर्दी तथा प्रशिक्षण के नाम से लेते हैं। फील्ड अफसर हर महीने 300-400 रुपये लेते हैं, नहीं दोगे तो ड्युटी नहीं करने देंगे।"

वीयरवेल, बी-61 ओखला फेज-1, में फरवरी की तनखा पुराने 5278-6448 रुपये ग्रेड अनुसार दी। मजदूरों ने 11 मार्च को विरोध में आधा घण्टा काम बन्द किया। फिर 12 मार्च को मजदूरों द्वारा काम बन्द किये दो घण्टे हो गये तब मैनेजमेन्ट ने नोटिस लगाया कि मार्च की तनखा 6084-7410 रुपये वाले नये ग्रेड अनुसार देंगे और साथ में फरवरी का एरियर भी। **डीटेल्स,** डी-30 ओखला फेज-1, में 15 दिन काम करवाने के बाद 25 मार्च को कुछ सिलाई कारीगरों को निकाला। विरोध हुआ। मैनेजमेन्ट ने उन्हें 6084-7410 रुपये वाले नये ग्रेड से भुगतान किया। **ओरियंट हाउस,** एफ-8 ओखला फेज-1, में 28 फरवरी को भोजन अवकाश में सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर एकत्र हुये। नये ग्रेड के नारे। मैनेजर ने गेट पर पहुँच कर आश्वासन दिया। मौखिक की जगह लिखित में देने की माँग। साहब ने बातचीत के लिये प्रतिनिधि माँगे। हम सब सात सौ मजदूर कह रहे हैं, हमारे कोई प्रतिनिधि नहीं हैं। काम बन्द..... एक घण्टे बाद 6084-7410 रुपये वाले नये ग्रेड लागू करने का नोटिस कम्पनी ने लगाया। (जानकारी 'नागरिक' के 16-31 मार्च अंक से)। **शाही एक्सपोर्ट,** एफ-88 ओखला फेज-1, में पाँच हजार से अधिक सिलाई मशीनें हैं। यहाँ महिला मजदूर ज्यादा हैं। नये ग्रेड की घोषणा होते ही मजदूरों में हलचलें बढी। कम्पनी ने नोटिस लगाया है कि मार्च की तनखा 6084-7410 वाले नये ग्रेड अनुसार देंगे और तब फरवरी माह का एरियर भी देंगे। **भूमिका,** डी-88/2 ओखला फेज-1, में नया ग्रेड लागू करने का आश्वासन...... *सरकार से कागज, काम बन्द करने पर आश्वासन, चिन्हित हुओं को छाँट-छाँट कर निकालना आदि पर 17 अप्रैल, रविवार को सुबह 10 बजे से चर्चा आरम्भ होगी। बातचीत रात 9-10 बजे तक। यह मजदूर समाचार तालमेल की बैठक में होगी — सी एन 49 पहली मंजिल (गोपाल ज्वैलर्स के सामने), अल्ला मोहल्ला, तेखण्ड। अपनी सुविधा अनुसार हर रोज बैठक पर मिल सकते हैं।* ■

● *1 फरवरी 2011 से* **दिल्ली सरकार** *द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल श्रमिक 6084 रुपये (8 घण्टे के 234 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 6734 रुपये (8 घण्टे के 259 रुपये); कुशल श्रमिक 7410 रुपये (8 घण्टे के 285 रुपये) (स्टाफ में दसवीं से कम 6734 रुपये (8 घण्टे के 259 रुपये);* दसवीं पास पर स्नातक से कम *7410 रुपये (8 घण्टे के 285 रुपये)*; स्नातक एवं अधिक : 8060 रुपये (8 घण्टे के 310 रुपये)। पच्चीस पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली-110054

● पहली जनवरी 2011 से **हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4503 रुपये (8 घण्टे के 173 रुपये); अर्ध-कुशल अ 4633 रुपये (8 घण्टे के 178 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4763 रुपये (8 घण्टे के 183 रुपये); कुशल श्रमिक अ 4893 रुपये (8 घण्टे के 188 रुपये); कुशल श्रमिक ब 5023 रुपये (8 घण्टे के 193 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5153 रुपये (8 घण्टे के 198 रुपये)* / इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ।

आई एम टी मानेसर (पेज तीन का शेष)

मुंजाल शोवा श्रमिक : "प्लॉट 26 सैक्टर-3 आई एम टी स्थित फैक्ट्री में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं और होली के बाद से मजदूर कम पड़ रहे हैं। इधर 21 मार्च से जबरन हर रोज 16 घण्टे रोक रहे हैं। फैक्ट्री से निकलने नहीं देते, धक्के मार कर अन्दर रोकते हैं। यहाँ **होण्डा, हीरो होण्डा, यामाहा** मोटरसाइकिलों के शॉकर बनते हैं। लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है, 16 घण्टे यह करना बहुत पीड़ा देता है। रोटी के लिये पैसे नहीं देते। ओवर टाइम का भुगतान 38-43 रुपये प्रतिघण्टा।"

गेट पर नाम नहीं का कामगार : "प्लॉट 344 सैक्टर-7 आई.एम.टी. स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूर सुबह 9 से साँय 7 तक और पुरुष मजदूर रात 9, 10, रात 2 बजे तक 4 असेम्बली लाइनों पर मोटरसाइकिलों का पुर्जा तैयार करते हैं। तनखा 4200 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस. आई. व पी.एफ. के पैसे तनखा से काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते। गाली देते हैं। पीने का पानी खराब। महिला तथा पुरुष मजदूरों के लिये एक ही शौचालय है। जाँच वालों के आने की जानकारी कम्पनी को थी इसलिये मार्च में उस दिन दोपहर तीन बजे ही सब मजदूरों की छुट्टी कर दी......"

ट्रैक ऑटो कम्पोनेन्ट्स वरकर : "प्लॉट 21 सैक्टर-7 आई.एम.टी. स्थित फैक्ट्री में पावर प्रेसों पर सुरक्षा उपकरण लगाने से फर्क पड़ा है पर कुछ पावर प्रेसों में डबल स्ट्रोक आ जाती है। फर्श ऊबड़-खाबड़ होने के कारण शीट ब्लैन्क से भरी बड़ी ट्रॉली बैक हो कर मजदूर के पैर पर चढ गई। घायल मजदूर को इन्तजार करना पड़ा क्योंकि वैन जिसे एम्बुलैन्स के तौर पर प्रयोग करते है उस में कच्चा माल भरा था। पैर में 12 टाँके लगे। सुबह की शिफ्ट 7 बजे आरम्भ होती है, भोजन बना कर ले जाना बहुत कठिनाई लिये है। जनवरी से तीसरी मंजिल पर कैन्टीन बनाने की बात थी पर वहाँ शीट रोलिंग मशीन लगा दी है। कम्पनी ने स्वयं 30-40 स्टाफ वाले ही रखे हैं, 600 मजदूरों को 5 ठेकेदारों के जरिये रखा है। यहाँ **मारुति सुजुकी, होण्डा, हीरो होण्डा** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। पीने का पानी ठीक नहीं है — फिल्टर मशीनें 8 महीनों से खराब हैं। ऊपर की दो मंजिलों के मजदूर शौचालय के लिये नीचे आते हैं — हर समय लाइन लगी रहती है।......" ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011